

# Creating Peace & Interfaith Harmony

Rishikesh, India

From the 14th - 15th February, a large Interfaith Peace Conference was held at Parmarth Niketan, Rishikesh (Himalayas). Under the banner of Parliament of Religions (Sarva Dharma Sansad), and organized by Pujya Swami Agniveshji and Pujya Swami Chidanandji, top leaders from Hinduism, Christianity, Islam, Sikhism and Jainism came together to discuss the pressing issues in India today. The issues raised and discussed included: caste system, communalism, women's rights, selective female feticide and infanticide, environmental protection, terrorism and of course inter-faith harmony. The leaders all agreed to come together, join hands and forces and lead their followers toward peace, non-violence, communal harmony and compassion for all living creatures and Mother Earth. A seven point program was finalized, agreed upon and signed by all members present (enclosed herewith). Further, it was decided that the sansad should continue to meet on a regular basis to continue to work on any issues of controversy or contention.









#### The main spiritual leaders who attended include:

Swami Agnivesh ji, President World Council Arya Samaj Swami Chidanand Saraswati ji, Parmarth Niketan, Rishikesh Father Dominic Emmanuel, spokesman for the Catholic Diocese Malaunna Mahmood Madani, MP, head of Jamiat Ullema-e-Islam Ejaz Ahmed Aslam ji, member Markazi Majlis-e-Shoora, Secretary, Public Relations of Jamaat-e-Islami Hind

Intezaar Naeem, Assistant Secretary (Community and National Affairs), Jamaat-E-Islami Hind Swami Veda Bharati ji, Swami Rama Sadhaka Gram Acharya Balkrishan ji, Patanjali Yoga Peeth Amrendra Muni ji, Jain saint





Goswami Sushil ji Mahant Trayambak Puri ji, Secretary Niranjani Akhara Mahant Ravindra Puri ji, Secretary, Nirvani Akhara Mahant Rajendra Das ji, Secretary Udasin Bara Akhara Swami Pragyanand Ji Rajender Singh "Pankaj", General Secretary, VHP At the conclusion of the two day program, after discussing a wide range of issues affecting India today, the revered leaders from all the traditions agreed upon seven pledges. As the work of the Sansad continues, the spiritual leaders will continue to meet, continue to discuss issues of controversy and contention, and continue to take joint pledges regarding these issues.

These seven pledges listed on the opposite page are just the beginning.

A beautiful part of the conference was the way everyone gathered together, on the holy banks of Mother Ganga, for the divine Ganga Aarti ceremony. All day long they gathered together in the hall, discussing, planning and working. In the evening, they gathered together in prayer and son. Following the aarti, we heard beautiful words of inspiration spoken by many of the leaders.







At the conclusion of the Conference, there was a special tree plantation program. Trees of harmony, peace and love were planted jointly by the leaders of the various religions, symbolizing new life, new hope and new unity.







#### Pledges taken by all leaders

I take a pledge in the name of Parmatma/ Allah/ God/ Ek Omkaar that I would devote 30 minutes to one hour of my time every day to meditating on Non-violence, Truth, Compassion, Love and Justice. I shall endeavor, to the best of my ability, to establish a society free from:-

- 1. <u>Casteism</u>: I will neither abide by or support the caste system nor encourage it. I pledge that I will resist any form of alienation, discrimination and oppression in the name of caste.
- 2. *Injustice against Women:* I will vehemently oppose Female Feticide and the evil of Dowry System, and promote women's empowerment.
- 3. <u>Violence and Communalism</u>: I will honour all of the world's religions equally, regardless of my personal religious inclination. I will respect all religious traditions as well as create an ambience of love, fraternity and respect. I shall oppose communalism, fundamentalism, hatred and violence in the name of religion.
- 4. <u>Drugs and Alcohol</u>: I shall work towards eradicating the curses of alcohol, drug and tobacco abuse and help to de-addict and rehabilitate their victims. In this regard I also oppose the production, sale and promotion of the consumption of these substances.
- 5. *Blind faith and dogmatism*: I will combat dogmatism, fundamentalism, blind faith, and superstition, as these can pave the path for terrorism. I shall cultivate and propagate a balanced, reasonable temper and rational thinking.
- 6. *Oppression and exploitation*: I will oppose and try to abolish child labour, bonded labour and other forms of inhuman oppression. I will also work to eradicate the dire poverty and desperation in our country which leads to child labour. I will raise my voice for a better and common education system for all children and also propagate compassion towards animals and care for the environment as well as human rights.
- 7. <u>Corruption</u>: I pledge to eradicate the scourge of corruption prevalent in our society. Along with my mother tongue, I will respect all the other languages.

## प्रविध

भारी न पड़ जाए लापरवाही. हीरालास मार्ग पर वहनें की आवाजही के कारण सीवर का ढकान टूट गया। इसे बदलने में लायस्वाही बार्सी जा रही है. शिससे दुर्घटना का अंदेश कर रहता है।



एकज्दता सर्वधर्म संसद में आतंकवाद सहित विभिन्न मुद्दों पर की धर्मगुरुओं ने चरचा

# कुरीतियों के उन्मूलन का लिया संकृत्य

व्यक्तिहा। तीर्थकारी में आयोजित सकेको संसद के दिनीय अधियेशन में अस्तियाद, जारिकाद, महिला उत्पेदन, कन्यापुण हत्या, नता उज्यूतन के लिए चराकल तैयार करने को सामृहिक संबद्ध तिवा गया। धर्ममुख्यों ने लिए नए फेसलों को मूलंक्य देने और सामाजिक विकास में बाधक सम्प्रमाओं के वित्पृत के लिए रेशवासियों के विश्वास को जीता पर और विधा

रविवार को परमार्थ निकेतन में आयोजित सकेवर्ग संसद के हुमरे दिन आयोजित अधियेशन में समाज को कमबोर करने वाली तकतों का मिलसूल कर गुकाबारा करने का सामुद्रिक संकारण एक। राज्यसभा सहस्य मीलका महत्त्र अधार मदनी ने कहा कि धर्मसंसद में निरु नए पैसलों के लिए पालीय रामान को विस्थास में लेज नकरी है। उनोने सक्तव कि दस पौसदी विषटनकरी तकितवों के मुक्तबले को विना प्राचारण इस्तेवाल के नब्बे फीमडी अमजन को सर्वेश लेख होता। क्या कि आलंक कन्यपुण हत्या, महिला उत्पीदन वैश्वे हिंसाओं को तेवले के लिए हिंदू-मुस्लिम तमान को एक बुट होना ही होता। महनी ने एकता का वाताबरण तैयार करने के लिए सर्ववर्ष संसद जैसे कार्यक्रमें में निरंतरत तार जाने की पुरसंद बकारता भी की।

आसम के परमध्यक्ष रचानी विद्याल युनि महाराज ने कहा कि वर्तमान समय



हम साथ-प्राय : सर्ववर्ष संसद में अवक्ष्यार, संस्वधिकत के विकास संयुक्त रूप से संकल्प लेते वर्षाचर्य।

धर्म, जाति से लगा उठकर तट्टीय विकास पर चितन का है। जमात-ए-इस्लामी हिंद के सह प्रवित्र इंतजर गाँम ने कहा कि अलंकबाद के नाम पर मुसलकरों को निवान कवारे की संच को कदलने की जरूरत है। कहा कि यह कार्य छोली समही

गंगी नहीं में करंड से

साजित के तहत बढ़ी तकत कर हुए है। तसन हिंसक पटनओं के मूल की जानो क प्रवच भी होन वाहिया

धर्मलंखा में रचनी अधिकाम महाराज गराकात विकि को पूर्व कुलकी हो. युवीता डोभाल, एक्ट्रा अक्टबर अग्रतम्,

स्वामी आर्थित, पीटर फ्रेंगर, स्थामी यंसलंद आदि ने विचार स्थे। आजन प्रमंत्रक अगर तिवारी, वॉ. अल्का पटेल, सच्यी भगवते, आभा सारकते, एकस्प रामी, आसी दीवित, नोंद्र बिह, सुनाय आदि ने सहबोग प्रदान किया।

#### बेकसूरों पर जुल्म, जेहाद नही : मदनी

अधिकेल। केरुमुचे पर जुल्म और अत्याचर नेहार नहीं आर्थनगार है, इसका समाधन आयात्रत के पता है। अर्थतंत्रह के माञ्चम से सर्वधर्य समध्यव के उद्यत लोगों को लोहा जारण और दुखपृतियों के विलय जनक विन्य व्यवसा। यह ब्द्वार है वनसभा सदान और क्वीप्यूत उत्तेन-ए-विंद के पूर्व महासाध्य सीलान म्लमूद असद महन्ने के।

विश्वेनकी में आयोजित सर्ववर्ध संसद में तमित होने आए मीतान मदनी ने तेहाद को मुल्प के खिलाप लड़ई लड़ने का राज्यम काम। उन्होंने केम्पूर लोगे के अर्थेड्न को अनंकवाद करा दिया। बहा अतंकवर के निरमृत का समधन सना नहीं समाज के पास है। धर्मपुरुओं को सता से कोई उन्मेद की है, लिहाना इस कार्य के लिए आम आहमी को जनरूक किया नारकः उन्होंने बता कि मुसलकार्त के लिए ब्रिय में भारत नीती सुकासूरत जगह नहीं है। बाहा कि हिंदू और मुसलबार में आपनी विरुवास करवन हो इसके लिए डोम कर्व किए रहरी।

#### अहिंसा को आत्मसात करें

क्षिकेका। प्रस्तवत रांत स्वसी आंग्लेस महाराज ने कहा कि अहिंस की वृत्ति को जीवन में बालने की जरूरत है। इस प्रकार की संस्कृति विकासित की जानी पातिए। उन्होंने पर्याकरणीय असंकूलन का कारन

मनुष्यपृति में आ सी विवृति की वताया। द में सभी जीव एक दूसरे पर निर्धर है. तिहान मनुष्य को एकाविकार की मानीसकत बदलने ही होती। बहा एक-दूधरे को कम से बम कष्ट देवर लीवन जीने का प्रयम करना चाहिए।

#### सदकार्यों के लिए सहायता

अधिकेशः स्थाने विद्यानंद सुनि और स्थानी अधिकांत महाराज की पहल पर आयोजित धर्मतासद में मौजूद २२ वर्षीय प्रवचन बेरावर्ष स्वामी बेरानंद महाराज ने संसद् क्रमें सम्बन्धिय सुधार, अधनवैन, कुरीतियों के विकास जगतान की आयुर्ति हो लिए गए संकाम को मुझाम देने के लिए काद 11 हजार रुपये की सहावत प्रदान की। इस मीके पर अन्य धर्माधाओं ने भी आधिक सहायता प्रदान की।

#### तोरमत महने की प्रवृत्ति बदले

व्यक्तिमा 'पुर तन्त्र थी है जुन्म की कार में सामित, ऐ संशक्त कुछते इनार न बेचे...' हेर से धर्मासद की संबंधित करने बाते इंडवल नईम ने करा कि राजनेकओं को आर्थनकाद पर लेक्सर मंदने की प्रश्नीत करातने और ऐसी बारहाजी के तील समाध्यम निकालने की जरूरत

उन्होंने जुल्य के जिल्लाक एकानुद्र संदर्श कारों की जरूरत करहें।



महाशिवरात्रि महोत्सव शुरू



उनसे ने फूंका

रेल बजट में उत्तरार का आरोप लगाया

**विन्दुस्तान** सोमगर १६ परवर्ग २००९

#### एक नगर

प्रेक्टिकल का एक और मौका अभिनेता। राजबीय इंटर करियेन त्योका के इंडीस्ट्राल संस्थानक, व्यक्तिमात परीवार्षिकी की प्रजेशायक परीवा का एक

और बीका रिया गया है। जिल्लाक राजालय सिंह ने कारण कि यो तरात किसी कारणगण व्यक्तिकार गणित, विज्ञास, गुरुविद्यास और ग्रामांत्रक विकार की प्रयोगालक फीक्स बड़ी दें सके, यह 17 परवरी को उक्त परीक्षा करियेज में दे सकते हैं।

16 को समृतिक अवकाश

श्राणिकेशः क्षते बेटन उसकेन की सिक्तारितों को लाबू करने की मांच की लेकर उस्तराबंद निकाय वर्गको महारोप १६ पान्ही से वास्त्रीक अवकात का लेखा। महासंघ को बैठक में वह निर्मात रिच्च कथा बैठक में दक्षाम हुये, रमात्र करताते, वेद कियोर, तरभावते, जनक चरेत, चेतान, नेरस्कार जिंह, देखें जिंह आदि

आयुर्वेद पुस्तकालय बने अधिका। प्रतिका अस्तित वाहित्य का पुस्तकालय बजाने पर और दिखा बीच की बैठक में बब्दओं ने बता कि आयुर्वेद सर्वेश्व वैद्धों के यह करते

## हिंदू का 'ह' और मुस्लिम का 'म' मिलाने पर जोर

 वे दिवसीय नर्त धर्म संसद में कर्त मुद्दी पर कर्त

огаїна вівром мівол

दिल्लीय वर्ग वर्ग संबद् समान हो रहे। इतमें आतंकबाद से लेकर इराया को प्रस्त न देने की सत करों यां है। सन ही पर्वधारिकों ने लिंदू का 'ह' और पुण्लिय का 'म' को फिलाने पर जोत्र दिया, साहित

वित्रय के लिए 'हम' एक हीं। पासर्ग विकेतन में सर्व वर्ग तंत्रद का दूशन दिन खान गरा। इसमें शिक्षण धर्मी के प्रतिनिधिमी ने start site Wor Night पर एकराव भागत की।

ऑक्ट सर की अध्यक्षत करते अवेत पर का आध्यान करते पुर राज्यान संसद को जावका उत्त-उत्तेया न विंद के पूर्व बहार्याच्या संबद सीताल परपूर् बहारी ने कहा कि संबद की पाहिस् कि पात्रों अब जोगों में निस्ताल हैया को। उन्होंने कहा कि समान और देश के अंदर नकता फैलाने कार्र लोन महत्त 4 फीसदी हैं। स्था करण

है कि का पुट्ठी पर लोग सेप आग पर्वर लोगों का सभी हो जाते हैं। भीतवार कटनी ने कहा कि आरंकनकट के विकास सोगों को



आनंकवाद पर नर्वधर्म संबद में हुई व्यापक पार्च

करन शेषः समान की रुदियों को दूर काने के लिए मर्गनुष्टाओं को आने आस होता। ईसाक के लिए सक्के स्वर एक होने चाहिए। परवर्ष सकत कर रहर होने पाहिए। परावर्ष विकेतन के परावरणक करायों विकार । प्राावरी हुने ने करा कि प नो विद् और न रहे शुक्तिक धर्म में आईकावर के लिए करा है। अब विद्-पुलिया विकार होंगा कि में शुक्तिक कर 'र' को विकार पर और होना पाहिए। वाकि हमसे परावन

'हम' के रूप में हो। इस मैंके पा हिंदू और पुरितय रायान के तरस्य स्त्रेण ने अपने विच्या रखे। प्रेकिस बुधीला चार ने कहा कि चारत में पुरितम कट्टाचार कही को खा। अब क्या हो चार है। इस पर की

उन्होंने पुरित्स विद्वारों से उन पर शकासक विरुक्तिय वारीस रिका करकरे पर और दिया। परवक

इंडका लीप ने कहा कि आर्थकपाद कर बड़ा करण जहंबाकी भी है। क्रमोपे करेगांच महित कई उदहरण हिला उन्होंने कहा कि उद्योकका की क्षक रोग। रेख की होन चडिर कि आसी घटन होते ही किसी कृतिसन के विश्वसक्त सम्पन्न दुन्ने कर लिया जार। रुक्को अण्डिस ने इक्कोककट पर संबद के स्वेते को क्षत्र विकास समीचे कहा कि संबद

#### मुसलमानों के लिए सबसे अच्छा हिन्दुस्तान : मदनी

अधिकातः। राज्यस्य जांबर एवं जनस्य उत्त-उत्तेसा-ए-विंट के पूर्व प्रस्तित्व सांबर मैताव करपूर गर्ला ने कहा कि त्यान विकाली के बावपुर मुश्तकानों के किए विनुस्तन से बावधा देश कीरे जा है। उन्होंने कहा कि उत्तनविक तथी के उत्तेशनत के बावोंने प्राप्ति कर्या कि उत्तेशिक्त कि बावोंने की उत्तेशिक तथी के ते बातबीत में गोलावा गरके ने बचा कि बने हो शिकायों हो लेकिन वह सर्वाचेन नाम है कि मुसलवारी के तिल बाता में अवता देश कीई जो है। इस बात को हा बिस्से को म्लीकारण होता। उन्होंने कहा कि को शिवपुर शिक्सपरे हैं उन्हें फिल-जुलकर पूर किया जा सकता है। मीरवान मदनी ने कहा कि आतंकवाद के म्हानी के लिए सरकार और उन्होंदिक रातों में उन्होंद करना टीक नहीं है। नगरा आरोकवाद की वयत यह का सकते है।

वर्षक्रमा के कारणी पर रुवाँचे कहा कि नहांबाकी भी हाओं से एक है। बंधद का हकते के जिल देखी दहराए कर अवन्यता के बारे में उन्होंने बहा कि नह हमसी कहातह नहीं बांगे। जो न्यायता ने हम किया है जाका विशेष कोई क्यों कोचा। ताम हो उन्होंने मंदिया से भी कहा कि उन्हें वह सर्वाल पुरुतकान होने की वजह से न पूछा नहरू। मोतान नहने ने कहा कि राजनीतित तमें को उनने ताम के तिय इस्तेमल कर रहे हैं। इसके भी व्यवस्थाएं विषद् रही हैं। लोकसब भूगम संभवे सम्बन्ध पर उन्होंने कहा कि उनको कोई वर्दश नहीं है।

बीके सा स्वार्त मेर बार्ता, सरावर्तन मोलवानी मुत्तील, नेहर करंडचे, पंडोक, रविंद पुडी, खेलबार, पर्डापनी कुम्फ, पुनि अमीड, स्वार्त स्यु जिल, राजन अमार असाल, अमीला, तोक प्रकास तोकेन अंजुन प्रतित, केर प्रकार बेरिक, आदि मीन्द्र प्रि। अर्थीका, तीक प्रकार लेकिन आदि मैक्ट से।

# दैनिक जागरण



बामा ने पूछा, भोजपुरी, हरियाणवी जानते हो! -16

धौनी के सामने सीरव का बदला लेने की चुनौती - 14

िक्स - विकास - सावश्रंत - प्रतान - प्रावसा नक्सीर - किमावल प्रवेश - परिवास संवाल से चलारिया

#### एक राष्ट्र, एक जन और राष्ट्र का विकास हो उद्देश्य

## हिंदू-मुस्लिम नहीं, विकास हो मुद्दा

ऋषिकेश, जागरण कार्यालयः। हिंदू, मुस्लिम, सिख व ईसाई संप्रदाय से जुड़े संतों ने सर्वधर्म संसद के जरिए एक मत होकर आवाज उठाई कि किसी भी संगठन के लिए हिंदू या मुस्लिम नहीं, विकास मुद्दा होना चाहिए। 'एक राष्ट्र, एक जन' की सोच के साथ विकास ही सबका उद्देश्य होना चाहिए।

परमार्थ निकेतन स्वर्गाश्रम में सर्वधर्म संसद द्वारा आयोगित इंटरफेथ पीस कांग्रेंस में जातिवाद, कन्या भ्रूण हत्या, अहिंसा, नशा, रूड़िवादिता, अत्याचार, शोधल व भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रस्ताव पारित किए और सभी संतों ने इन पर एक राय प्रकट की। सम्मेलन के अंतिम दिन परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनि महाराज ने कहा कि जो 60 साल में नहीं हुआ, वह छह वर्ष में किया जा सकता है।

छह वर्षों के लिए सभी को हिंदू, मुसलमान का मुद्दा छोड़ विकास को मुद्दा बनाना चाहिए, तभी भारत का नवनिर्माण होगा। उन्होंने कहा कि मस्जिद दूटे तो मंदिर वालों और मंदिर टूटे तो मस्जिद वालों के दिल में दर्द उठना चाहिए। एक राष्ट्र, एक जन की सोच से ही देश आगे बढ़ेगा। जमात-ए-उलेमा हिंद के पूर्व महासचिव व राज्यसभा सदस्य मौलाना महमूद असद मदनी ने कहा कि आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ना गलत है। आतंकवाद में वह मुसलमान शामिल है, जिनके साथ इंसाफ नहीं हुआ। पूरे इस्लाम को एक नजरिए से नहीं देखना चाहिए। कार्यक्रम के समन्वयक स्वामी अग्निवेश ने कहा कि विश्व संसद शत प्रतिक्षत न सही, अधिसंख्य मुद्दों पर एक है।

देश की खुशहाली, अमन, विल प्रथा, महिला अत्याचार व प्रष्टाचार जैसे मुझें को यह संसद आगे भी लेकर चलेगी। कार्यक्रम में महामंडलेश्वर स्वामी वेद भारती, फादर डोमनिक एम्नयूल, एजाज अहमद असलम, अमरेंद्र मुनि, केंद्रीय उद्योग राज्यमंत्री रघुनाथ प्रताप सिंह, विहिप के केंद्रीय मंत्री राजेंद्र पंकज, गोस्वामी स्र्वध्रम् संसद में लिए गए कई संकल्प इस्लाम को आतंकवाद से जोड़ना गलत

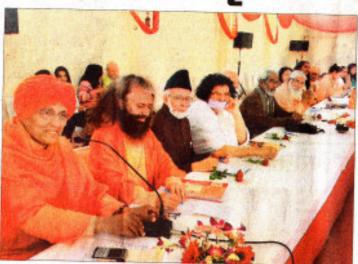


सर्व धर्म संसद में एकता और सौहार्द का संकल्प लेते संत।

सुशील, हटयोगी साहिल नाथ व इंतजार नईम सहित 70 प्रतिनिधियों ने शिरकत की। कार्यक्रम के अंत में आश्रम परिसर में सभी ने सर्वधर्म समभाव के नाम पर रुद्राक्ष का पौधा लगाया।

#### ार पर पर पर पर पर का सम्बद्धा में का प्रस्तावा पर का सरस

## 'हिंसा और घृणा का विरोध करेंगे'



प्रसार्थ निकेतन में रहीय सर्वधर्म संसद में आनंकवाद और संस्थानिकता के फिलाफ हुंकर भरते धर्मान्यमें

अधर उजाला ब्यूनो

समिकेशः। देश में आतंकावद् जातिकाद् भूगावत्कः, मोध्यप्रिकतः के जिलाकः महीतं बनाने के तिया तीनांकारे में शक्तपं मंगद्र का अस्थितन विष्ण प्रधा दानां देशः भा से तुद्रे हिंदू, मुक्तिकः, तिम्ब, इसर्वे और जैन धर्म के आवारों ने आधुरिकः परात के लंदाना में दोस पहार करते हुए सोध्यप्रिकः हिंता और पूंचा का पुर्शानं विशेष करने का सक्तपन्न तिया।

स्वर्गत्रम विभाग प्रामानी निके तह से प्रामीको संसद का हुआईन ग्राहीत संधीयका कार्यों अस्मित, परामार्ग विकेत्य के परामाण्या कार्यों विद्यार के परामाण्या कार्यों विद्यार के प्रामाण्या कार्यों विद्यार के विद्यार कार्याय मुख्यानी लोकार्यकारी के संधीयत कार्याय कर्मत प्रामी भाष्याचारी के संधीयत कार्याय होता प्रामी भाष्याचारी के संधीयत कार्याय हीर प्रकारीतिक बार किया।

स्थानी अधियेल ने बताब कि इस क्टरेन्स को इंटरफेश नील क्टरेन्स का नम दिया नवा है। स्टिन्स के स्थान ही विकास की भी इसमें देश पर के धार्यकार्य स्थानन और देश के मौजूस स्थानित के पराचा करेंगे। सेमीनार में इस बात पर जोड़ देख जाएन कि प्रस्पार सहयोग से एक मेंच पर अकार स्थान सम्बन्ध के निर्माण के आधा पा जातिकार, भेरावार, जंगानीय और सुआकृत तैसी असानवीय प्रण प्रमुद्धि करते मुश्लिकात का असान है। संगोध्य में जातिकात और मोद्धिकता को पाउनीय उन्हार्जित पर लगा करते के जिए धर्माचारों को हो पहला करते के जिए धर्माचारों को हो पहला करते के जिए धर्माचारों को हो पहला करते के जिए धर्माचारों मोस्स कर आधीरता पाउ को मार्च मार्टिन में दिलाई से अस्थितन किया नया था। अब पूजने बार पह उन्हार्जिंद में हो सी है। इसमें सर्वधार्म संतर का नात है 'धर्म जोड़ता है तेजूक सर्वी

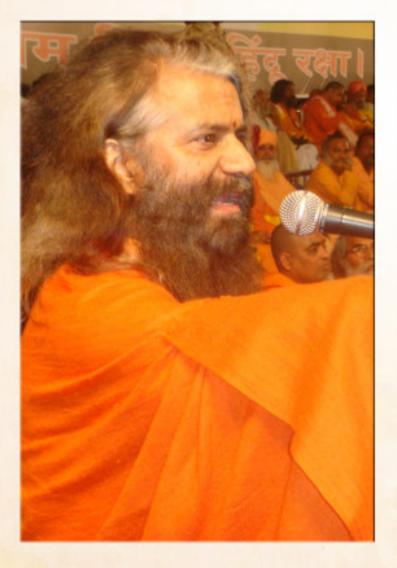
नहीं संभाव में पर्तवांत पोनवेत के अनुभाव संग्राहुन्य, जनात प्रश्नातमी हिंद के परिवाद जिलेतन सचिव एकाल अहम्द्र असलप्, त्रमाने आर्थेश, फेटा द्वेज्य, उपेन्द्र, पर्वावने कुमार, मनु सिंह, अंतुव पर्वाद, पोनवानी मुखील, बंदातान वैदिक, सारावा अस्यु, सारावा नंदकेतामा, केत सारावे, करेती, सुसीला अन्य स्थावी प्रमान्य, केतील किसती, मांच्य की, देख्य पर्वाद, अस्तेत सेंग, तरावंत रहेती, अंतुव रहिंद, विश्वादाना करेता समेत बादे सम्बद्धानी ने प्रशासनों पर पालव की। परिवाद को सीमीनय ही साई प्रतासन प्रहित



#### Mumbai, India

On the 27th January, straight from USA Pujya Swamiji flew to Bombay for a three-day meeting of saints from a wide variety of smpradayas and paramparas (traditions and lineages), including from all of the different akharas. The meeting was organized by Dharma Raksha Manch, a newly formed organization of the saints for the protection and preservation of dharma. The saints discussed a wide variety of topics and issues affecting not only saints and sadhus but the entire Indian community. They shared how each of them individually, as well as united collectively, can work to protect and preserve the ancient, spiritual culture as well as work for the poor people, for environmental protection and for prevention of communal tensions and violence.

The meetings were very fruitful, and culminated in a huge public function led by hundreds and hundreds of saints, and attended by more than one lakh (100,000) people.









After the Conference finished, on the 30th January, Pujya Swamiji invited some of the revered heads of the different akharas home to the Hinduja house, where He stays. Shri Ashok Hindujaji was very glad and blessed to welcome the saints to his home and to receive blessings for the family particularly at the auspicious time of the wedding of his daughter, Ambika.

#### Rishikesh, India

Pujya Swamiji was visited by a group of Buddhist monks from Indonesia and Thailand who requested Him to come to their ashram/monastery near Jakarta later this month. Unfortunately He won't be able to travel at this time due to prior commitments, but He promised them He will come soon. The love between them all was beautiful.







## Pujya Swamiji's Travel

Each month Pujya Swamiji travels to several locations, throughout India and abroad, invited to serve as the Chief Guest, Guest of Honour or other special role at inaugurations, installations, spiritual holiday celebrations and much more. The following is just a glimpse into the travels during this period.



#### Hindu-Jain Temple, USA

Pujya Swamiji traveled to Pittsburgh, Pennsylvania, USA to the temple of which He is the founder, inspirer and spiritual head, the Hindu-Jain Temple of Pittsburgh.



May 2009 marks the 25th anniversary of the sthapana ceremony for the temple, and so the temple's executive committee and board had requested Pujya Swamiji to please come out to Pittsburgh for a few days to help guide them regarding proper planning for the ceremony. He spent a week in Pittsburgh meeting with all of the old devotees as well as the new committee members.

In the middle of glorious, snowy winter, Pujya Swamiji met with the committee and guided them in chalking out plans for the sthapana celebration. There was also a large, wonderful meeting of the dozens of people who had been part of the community since the beginning.







Everyone spent the evening reminiscing about the days when Pujya Swamiji first came to Pittsburgh in 1980, how they convinced his Guru Pujya Swami Dharmanandji and Pujya Swami Sadanandji to permit him to stay, how he united the community together and provided them with the inspiration, leadership and guidance to build the temple.

The Hindu-Jain temple of Pittsburgh is the first temple in the world where not only Hindus and Jains worship together but also where both sects of Jainism (the shwetambar and digambar) worship together.

A beautiful book is being prepared on the entire history of the temple, along with beautiful photographs dating back to the early 1980s. The book will be available in May.

## Special Events & Guests at Parmarth

### World Cancer Day



February 4 was World Cancer Day, and to celebrate it Parmarth hosted a special fundraiser for a new cancer hospice being built in Rishikesh by divine soul Nani Ma.. The hospice will be a place for those with terminal cancer to come and spend their remaining days in peace and serenity on the holy banks of Mother Ganga.



The function was attended also by the honorable Health Minister of the state of Uttarakhand, Dr. Ramesh Pokharialji, Pujya Acharya Balkrishanji.

Beautiful speeches were given about not only the importance of having a cancer hospice center but for having more research into natural methods of cancer prevention and treatment.

#### **Thom Knoles Group**

A 10-day meditation camp was led by Thom Knoles, a world renowned Vedic meditation teacher in the Shankaracharya lineage. The group also had a special satsang and question-answer session with Pujya Swamiji in which He spoke on how to live our lives in meditation, how to bring the teachings into our daily lives, as well as many other topics







## Swaminarayan Group

A large group of western devotees of the Swaminarayan tradition came to Parmarth Niketan led by the sisters of Pujya Hariprasad Swamiji's ashram in Gujarat, came to Parmarth Niketan for a spiritual camp. More than one hundred of these devotees stayed for several days at Parmarth, imbibing the divine nectar and taking part in the sacred yagna and aarti ceremony, as well as special satsang with Pujya Swamiji.





## Brazilian Yoga Group

Dr. Jose Rugue, from Brazil, brought a group of approximately 40 students from Brazil to study yoga and ayurveda for three weeks at Parmarth.

They had a variety of classes from Dr. Rugue and all of the excellent teachers he called in, and they also took part in the evening Ganga Aarti and Yagna. They also had satsang and question-answer with Pujya Swamiji.

Further, when Dr. Rugue was here, the plans were finalized for the partnership between him and IHRF for the new Parmarth Yoga and Ayurveda center in Brazil.







## Gangaji Clean-Up









On the 27th February, Pujya Swamiji organized a large clean up program of the banks of Mother Ganga, all the way from Ram Jhula southward, and into the Swargashram Market area. All of the rishikumars and kanniyakumaris of the Parmarth Gurukul, all of the guests at Parmarth and many others, joined hands to spend the morning cleaning our Mother Ganga.

In February, we had several large groups from abroad staying with us, and all of the foreigners also came together to help in picking up trash from the banks of the river, from within the water itself as well as from the alleyways and marketplace.

Pujya Swamiji is ardently committed to the "Clean, Green and Serene" movement, particularly in this pristine, holy area. Hence, he regularly organizes and runs massive clean up programs.

Special thanks also to Yash and Avanti Birla for providing hoses and pumps so that in addition to picking up trash and sweeping the banks of the river, we are also able to truly wash the banks clean!

## Ayurveda classes in Gurukul

During the Ayurveda and Yoga program run by Dr. Jose Rugue, Dr. Avinash Lele, a world renowned Ayurvedic expert from Pune, came to teach to the students about the intricasies of ayurveda. While here at Parmarth, he gave some special lectures to our young rishikumars and also took them for a nature, ayurveda walk in the forest, showing them which plants are beneficial for which ailments, which have different medicinal properties, etc. The rishikumars all thoroughly enjoyed the program, and Dr. Lele has promised to return soon and regularly!







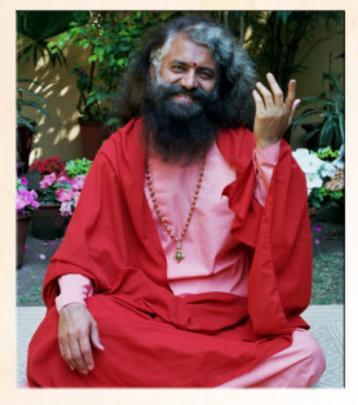
### Other Groups

During the month of February, we had so many different groups come to the ashram:

- 1. Thom Knoles meditation group
- 2. Brazilian Yoga and Ayurveda Group, led by Dr. Jose Rugue
- 3. Argentinian group led by yogacharya Ganeshnath (Jorge Bindondo)
- 4. Holland group led by the Saswitha Academy of Yoga and Philosophy
- 5. Italian Group led by Nandini & Ananda



### Divine Messages



# Valentines Day What is true love?

True love cannot be bought, bribed, begged, manipulated or forced.

It can only blossom from deep within the heart.

This is the time of year when, all over the Western world, people celebrate Valentine's Day. It's not a tradition celebrated in India, but nonetheless it is a wonderful opportunity to discuss love, as the entire holiday is dedicated to this beautiful, divine emotion.

Love is simultaneously the purest and one of the most complex emotions we find. True love, at is purest, is just that – pure, true and love. It is unpolluted, untainted, unencumbered by desires, expectations, needs or wants. Love is content just to love. As Khalil Gibran says, "Love has no other desire but to fulfill itself." Love needs no reciprocity. Love needs no appreciation. Love loves for the very sake of loving. Loving is its own reward.

It is, of course, essential to clarify, that I am NOT talking about lust or passion, which are completely unrelated to love.

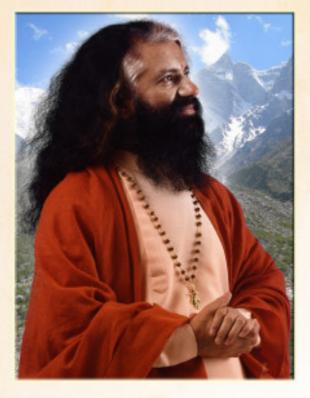
Love dissolves the very borders and boundaries of who you are, as you melt into its vast ocean. Love takes you from time to timelessness, from separation to divine union. Love is the sunshine which coaxes open the petals of the flower. Love is the water that causes the seed to sprout. Love causes those who love – whether they are people or flowers — to blossom and grow.

Unfortunately, too few people are able to really reap the benefits – physical, emotional and spiritual – of true love for they are incapable of either giving it or receiving it. Love is not glue which puts together that which is broken inside of you. Love is not a filler for the holes within you. Love is not a band-aid for your inner wounds. Love does not complete you, nor heal you, nor make you whole. In fact, true, pure love can ONLY be experienced between two people who are both already whole and complete. As long as you are looking to another – whether it's a parent, a child, a friend, a spouse, a Guru or anyone – to fill that within you which is empty, to heal that within you which is hurt, to put back together that within you which is broken, you will never be able to experience true love.

Many people mistake need for love. "I need you" is very different from "I love you" yet too many people mistake the former for the latter. Love gives. Need takes. Love accepts. Need demands. Khalil Gibran says, "Love possesses not nor would it be possessed; For love is sufficient unto love." When you find yourself criticizing your loved ones, finding fault in what they are or are not doing, when you complain and sulk, you are moving away from love. Not only does the love within your own heart become diminished but the beloved's feelings toward you change. No one on Earth likes to be nagged or criticized. No one likes to hear the same complaints over and over. No one likes to see sulking, grumpy or cranky faces day in and day out.

We think, tragically, that we can change people, that we can make them love us more or better or differently (or at all, in the case of someone who doesn't love us). Hence we manipulate, we cry, we complain, we sulk, we do all sorts of things which we think will turn the beloved in the direction we want, toward us. But it actually backfires. You may succeed in changing your beloved's actions. Depending upon the relationship, many people may find it is a lot easier to just amend their behavior to suit their spouse, friend, parent, child or other person who loves them. Yet that is only behavior. The heart cannot be molded or stretched or pulled according to our wishes. In fact, the more you nag and complain to loved ones, the farther they move, internally, away from you. Again, to quote from Khalil Gibran, "And think not you can direct the course of love; love, if it finds you worthy, directs your course." Love is one of the greatest blessings and greatest mysteries on Earth.

On this Valentine's Day, take a moment and examine whether you are truly loving, whether your love is full of acceptance, gratitude and giving, or whether your love is riddled with complaints, criticism, condemnation and comparisons. Take this opportunity not merely to eat chocolates or enjoy a candle-lit dinner but truly to find the source of pure, divine love within you – the love which asks nothing in return, the love which is content just to love



#### HOLI

Holi is one of the most festive, joyous holidays of the Hindu year. It is celebrated primarily in the North of India and it falls on the full moon day of Phalguna (February - March). The festival is marked by great revelry during which everyone paints each other with brightly colored powders. Song, dance and bright red, green, yellow and pink powder are the hallmarks of the occasion.

The meanings of Holi are numerous. For some, it is the festival of Springtime, the heralding of warm weather and bidding farewell to the winter. It is also seen as a festival of love, the return of fertility and virility. However, side by side with the celebration of love and fertility is the messege to exercise control over the emerging

passion. In some parts of India the story is told on Holi of Kamadeva (God of Love; Cupid), whom Lord Shiva burned to ashes as he tried to seduce Him out of His meditation. The messege is: celebrate love, but don't get carried away. Thus, Holi is a celebration of divinity and discipline over passion.

The Puranas describe Holi as a celebration of virtue over vice. It is a time when we rejoice in the victory of pure, divine Prahlaad over his aunt Holika. The story - in a simple, condensed way - says that Prahlaad was a young, beautiful, pure, divine devotee of God. However, Prahlaad's father was a powerful king who believed that everyone should worship him. At Prahlaad's refusal to do so, due to his singleminded love of God, his father decided to have him killed. Prahlaad's aunt (his father's sister), Holika, had been given a special shawl as a boon from God for various austerities she had performed. When she wore this shawl, she could not be burned by fire. So, Prahlaad's father and his sister devised a plan in which she would wear her shawl and hold Prahlaad tightly in her arms as they sat in fire. In this way, Prahlaad would be killed, but she would emerge unscathed.

However, as divine plan works, a strong gust of wind came and blew the shawl off of her, as well as carried pure Prahlaad to safety. Holika was burned in the fire of her own evil. One of the great obstacles in life to our spiritual progress is the difference between what we do or say on the outside and how we really are on the inside. Holika had performed certain austerities by which she was entitled to this boon from God. On the outside, she was "pious." But, on the inside she was not pure. Prahlaad, on the other hand, was a simple, pure, loving devotee of God. This is what saved him. This inner purity and inner piety are what truly save us, what truly make our lives divine.

So many of us go to temple, do the rituals, offer money to the priests, and chant a certain number of malas. Then, we go out and act in selfish, unpious, dishonest ways. These may

not necessarily take the form of malicious transgressions. It may simply be the way we speak to our children or to our loved ones. It may simply be the way we try to cheat those with whom we do business. It may be the way we sit and gossip about others.

All the rituals and puja in the world cannot make up for a lack of piety, honesty and compassion. The goal of going to temple is not just to perform rituals; the goal is to become spiritual. God is happier with pure, innocent, devoted Prahlaad than with all the austerities and rituals performed by his father and aunt.

Thus, on this divine occasion, we should pray to be filled with the purity and devotion of Prahlaad. We should commit ourselves to performing our puja, meditation and japa with focus, dedication and deep love for God.

One meaning of the word Holi is sacrifice. On Holi we light so many bonfires to revel in joy and to burn the effigies of Holika. The meanings of these bonfires are to burn that which is devilish and impure, leaving only the purity and divinity after Holi. However, we must remember not only to partake in the merry-making of a bonfire. We must remember to sacrifice that within us which is devilish and impure. There is some demon-nature in all of us. We must burn that demon-nature on Holi and emerge as pure and pious as divine Prahlaad.

The fire of purity and divinity which we light on Holi must burn continuously in our hearts throughout the year. We must have an ever-burning bonfire of impurity, so that we are continuously renewed, continuously purified and continuously rejuvenated.

On Holi we sing loudly in the Hindi language: "Holi I, Holi I, Holi I...." However, let us not just chant this rhyme; rather, let us truly pray to God that on this day "I" may become holy. Let us pray that "I" may become pious, pure and devoted as Prahlaad. In that way our lives and our hearts and our souls will be forever protected, forever sheltered at His holy feet.

As we chant "Holi I, Holi I, Holi I...." let us also pray that our "eye" may become holy, that we may be granted the divine vision by which we behold Him in all whom we see. Let us pray that through our holy eye, we never are led toward anger, greed, lust or jealousy.

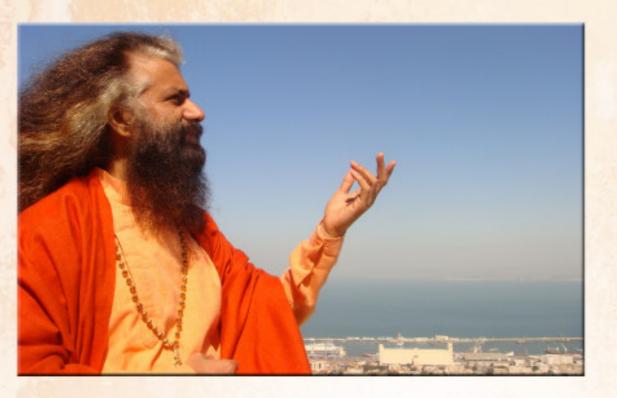
LET THIS HOLI BE A TIME WHEN WE CHANGE NOT ONLY THE COLOR OF OUR FACES, BUT THE COLOR OF OUR HEARTS.

LET US NOT ONLY "PLAY" HOLI, BUT LET US BECOME HOLY.

LET THE ONLY COLOR THAT TRULY PENETRATES OUR BEINGS BE THE COLOR OF GOD.

FOR, ON THE MORNING AFTER HOLI THE OTHER COLORS WILL WASH AWAY.

BUT WE MUST LET THE COLOR OF GOD BE INDELIBLE IN OUR EYES, IN OUR EARS AND IN OUR HEARTS.



## Pujya Swamiji's Itinerary March - May 2009

	March		April
1-30	Rishikesh	1-26	Rishikesh
		29-30	Venice, Italy

	May
1-2	Venice, Italy
3-5	Tenerife, Spain
7-8	London
9-17	Pittsburgh, PA
18	Philadelphia
20-31	Rishikesh

Please note: Pujya Swamiji's schedule is always subject to change.

Please email to bhagwati@parmarth.com for up-to-date information on His availability in Rishikesh